ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBBIL04292
RNI REG. NO. UPBBIL/2014/66218 PP. NO.- 182-183
ISSN NO.-2347-2944
Vol.-9, No.-I, Issues-X YEAR- June -2018

क्षेत्रीय विकास में उद्योग एक महत्वपूर्ण कारक

डॉ0 डी0 पी0 एस रावत
भूगोल विभाग, के0 जी0 के0 (पी0 जी0) कालेज, मुरादाबाद (उ0प्र0), भारत

उद्योगः— उद्योग का तात्पर्य वस्तु के निर्माण की प्रक्रिया से है। अतः विनिर्माण भूगोग का सम्बन्ध निर्माण, उसकी अवस्थापना एवं उसको प्रभावित करने वाले कारकों से है (Ropek, Howard GED. 1969) वर्तमान समय में कृषि क्षेत्र की बढ़ती हुई जनसंख्या के दबाव तथा बेरोजगार के परिणाम स्वरूप ग्रामीण क्षेत्र के निवासियों की आवश्यकताओं को पूर्ण करने में असफल रही। अतः ग्रामीण क्षेत्रों के सन्तुलित एवं सम्यक विकास के लिए शिक्षित नवयुवकों को रोगार के अवसर प्रदान करना एवं ग्रामीण कुटीर उद्योगों को प्रत्साहित करना एवं संरक्षण प्रदान करना अति आवश्यक है।

उद्योगों का स्वरूप एवं क्षेत्रीय विवरणः— भारत एक कृषि प्रधान देश है जैसा कि अध्ययन क्षेत्र विकास खण्ड 'पवई' की अर्थव्यवस्था भी कृषि पर आधारित है जा` पूर्णतया ग्रामीण है। यहॉ के नागरिक हथकरघा से वस्त्र बुनना, सूत कातना, बीड़ी बनाना, क्रेकरी, बेकरी चलाना पटसन से बाध बनाना, बिसाता के सामान बनाना, सीमेंट की जाली, पाइप, हौदे आदि सामान बनाना, मिट्टी के बर्तन बनाना तथा अन्य बहुत से छोटे—छोटे उद्योगों को अपनाकर अपनी जीविका चला रहे है। इसके प्रोत्साहन के लिए सरकार बैंको द्वारा कम व्याज पर ऋण देकर इन कुटीर उद्योगों को प्रोत्साहित भी कर रही है। अध्ययन क्षेत्र में कृषि एवं कृषि पर आधारित उद्योग धन्धों को विकसित किया जा सकता है।

1. कृषि यन्त्र निर्माण उद्योगः— अध्ययन क्षेत्र कृषि प्रधान क्षेत्र है। यहॉ की मुख्य व्यवस्था कृषि पर आधारित है। इसलिए कृषि यंत्रों से सम्बन्धित निर्माण उद्योग सेवा केन्द्र पवई, मिल्कीपुर, मित्तूपुर, खैरूद्दीनपुर एवं बिलवाई में स्थित है। जिसमें पवई सेवा कन्द्र विशेष सक्रिय है। यहॉ कृषि कार्य हेतु हल, थ्रेसर, पंखा, एवं अन्य छोटे—छोटे उपकरण विद्युत द्वारा संचालित लेन्स मशीन अथवा वेल्डिंग के माध्यम से बनाये जाते है। अध्ययन क्षेत्र में व्यक्तिगत सर्वेक्षण के आधार पर पाया गया कि सेवा केन्द्र पवई, मिल्कीपुर, मित्तूपुर में बड़ी राइस मिले तथा लगभग 25 छोटी—छोटी रइस मशीनें है एवं व्यक्तिगत धनकुट्टियों की संख्या 320 है। गेहूँ पीसने की चक्कियॉ 45 है, जो गॉवों एवं बाजारों में स्थित है।

2. गुड़ एवं खांडसारी उद्योगः— विकास खण्ड में गन्ने की खेती 31 हेक्टेयर क्षेत्रफल में की जाती है। अध्ययन क्षेत्र में गन्ने का उत्पादन बड़े पैमाने पर किया जाता है। यहॉ गुड़ एवं खांडसारी उद्योग बहुत ही प्राचीन उद्योग है। ग्रामीण आज भी विद्युत चालित मोटर या डीजल चालित इंजन या बैलों से संचालित कोल्हुओं में अपना गन्ना पेरकर उसे गुड़ या खांड बनाकर बाजारों में बेचकर अच्छी मुद्रा प्राप्त करते है। जिसमें रबी की बुआई के बाद का उनके बेकार समय का सदुपयोग भी हो जाता है। गन्ना अध्ययन क्षेत्र की प्रमुख व्यापारिक फसल है।

3. बनाश्रित कष्ठ उद्योगः— अध्ययन क्षेत्रों आम, नीबू, बबूल, सागौन, महुआ, यूकेलिप्टस आदि वृक्षों की प्रधानता है। यद्यपि यहॉ व्यापारिक रूप से वनों पर
आधारित बड़े उद्योगों का अभाव है फिर भी बढ़ई, लोहार इसको कुटीर उद्योग के रूप में अपनाऍ है जो विभिन्न सामानों को बेचते है। विकास खण्ड पवई में लगभग 11 आरा मशीनें है जहॉ लकड़ी की चिराई तथा फर्नीचरों का निर्माण भी होता है।

4. ईंट निर्माण उद्योगः— क्षेत्र में पक्के मकान बनाने की तीव्रता के साथ—साथ ईंट निर्माण उद्योग का भी पर्याप्त विकास हुआ। इस समय अध्ययन क्षेत्र में कुल 10 भट्ठे है, जिसमें प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से कुल मिलाकर लगभग 800 आदमी लगे हुए है। इस डद्योग में यहॉ के श्रमिक ईंट पाथने, ढोने, लादने, उतारने में लगे रहते है। इसके अतिरिक्त अधिकांश श्रमिक रॉची (झारखण्ड) से आते है। क्योकि ये क्षेत्रीय श्रमिकों की तुलना में अधिक निपुण, कुशल, परिश्रमी, ईमानदार एवं सस्ते होते है। इस उद्योग के लिए कोयले की आपूर्ति मुगलसरांय से होता है। यह उद्योग वर्ष में 4—5 महीने बरसात के कारण बन्द रहता है। जिसके कारण इसमें लगे लोगों को मौसमी बेरोजगारी का सामना करना पड़ता है। भट्ठा मालिक उन्हे उचित आर्थिक सहयोग देते है।

5 पशुधन पर आधारित उद्योगः— अध्ययन क्षेत्र कृषि प्रधान क्षेत्र होने के कारण यहॉ पशु संसाधन का बुनियादी महत्व है। विकास खण्ड पवई में प्रत्येक गॉव में 50 प्रतिशत परिवारों के पास कृषि हेतु बैल एवं 80 प्रतिशत परिवारां के पास दुग्ध उत्पादन हेतु गाय—भैंस जैसे दुधारू पशु पाये जाते है। वर्तमान समय में आधुनिक उपरकण जैसे— ट्रैक्टर आदि के उपयोग तथा बैलों की उच्च लागत के कारण लोगों को कृषि कार्य हेतु पशुओं पर निर्भरता क्रमशः कम होती जा

अनुरूपी लेखक

रही है। अन्य पशुओं में भेड़, बकरी, सूअर आदि मुख्य है।

दुग्ध को पूर्ण आहार माना गया है। एक कृषक के लिए पशु इतना उपयोगी दूसरा जीव नही है। इससे वह दुग्ध एवं कृषि कार्य के अतिरिक्त खाद ईंधन आदि की भी पूर्ति करता है। कुछ गरीब कृषक जो गाय, भैंस नहीं रख सकते या जिनका जागितगत पेशा है, वे भेड़, बकरियॉ पालकर उनसे दुग्ध प्राप्त करते है तथा भेड़ के बाल से ऊन बनाकर कम्बल बनाते है एवं बेचते है तथा मॉस हेतु उन्हे बेचकर अच्छी मुद्रा का अर्जन करते है।

6. मत्स्य उद्योगः– विकास खण्ड पवई के लगभग हर न्याय पंचायत में व्यक्तिगत पोखरे हैं जिनमें मत्स्य पालन किया जाता है। मत्स्य पालन हेतु सरकार सस्ते ब्याज पर ऋण भी दे रही है। कुछ ग्रामों में मत्स्य पालन विभाग आजमगढ़ द्वारा प्राप्त सहायता से मत्स्य उत्पादन व्यावसायिक दृष्टिकोण से किया जा रहा है। न्याय पंचायत रामनगर के कछरा ग्रामसभा एवं बागबहार के लारपुर ग्राम सभा में कहार एवं केवट जाति के लोग मत्स्य पालन ऊँचे स्तर पर कर रहे है। ये मछलियों से पैदा बच्चे पूरे क्षेत्र में बेचते है।

इस व्यवसाय में अध्ययन क्षेत्र के लगभग 250 लोग अपनी रोजी प्राप्त किये है। तथा मॉस हेतु उन्हे बेचकर अच्छी मुद्रा का अर्जन करते है। एवं उनका विक्रय करके अच्छी मुद्रा प्राप्त करते है। कुक्कुट फार्म भी विकसित है। कुटीर उद्योग के रूप में पशुपालन, मत्स्यपालन, के अतिरिक्त बढ़ई, लोहार, कुम्हार दर्जी आदि अपने परम्परागत व्यवसाय में लगे है। इसके अलावा यहॉ की मुसलमान जाति क्रेकरी, बेकरी, बीड़ी, अगरबत्ती, मोमबत्ती आदि कुटीर उद्योगों में लगे है। जुलाहे हथकरघा बिसाता, मिठाई, डिब्बा, खिलौना आदि लघु कुटीर उद्योग अपनाकर अपनी रोजी चलाते है।

क्रमांक	उद्योग	संख्या
1	फर्नीचर निर्माण	30
2	दुग्ध उत्पादन सहाकरी समिति	80
3	ईंट भट्ठा	10
4	लोहे की जाली एवं दरवाजा निर्माण	16
5	चावल मिल	18
6	इन्जीनियरिंग वर्कशाप	10
7	लकड़ी चिराई केन्द्र (आरा मशीन)	11
8	मत्स्य पालन	15
9	व्यक्तिगत दुग्ध उत्पादन केन्द्र	12
10	मुर्गी फार्म	8
11	सीमेंट जाली निर्माण	5
12	अगरबत्ती	6
13	मोमबत्ती	4
14	बीड़ी	5
15	मैदा मिल	2
16	सुअर फार्म	2
17	शीत गृह	1

निष्कर्षः– स्वतंत्रता के पश्चात विभिन्न पंचवर्षीय योजनाओं में लघु एवं कुटीर उद्योगों को बढ़ावा देने हेतु केन्द्रीय एवं राज्य सरकारों ने विशेष ध्यान दिया। पिछले वर्षो में केन्द्रीय एवं राज्य सरकारों द्वारा अनेक योजनाएँ प्रारम्भ की गई। जिनमें प्रथम संगठन (लघु उद्योग विकास संगठन 1954) का मुख्य उद्देश्य तकनीकी सलाह देना तथा द्वितीय संगठन (लघु उद्योग निगम 1955) का मुख्य उद्देश्य छोटी–छोटी औद्योगिक इकाइयो के सहायतार्थ व्यापार कार्य चलाना था। वास्तव में कृषि क्षेत्र का विकास तथा लघु एवं ग्रामीण उद्योगों का विकेन्द्रीकरण के माध्यम से ही जनसंख्याा के आधारभूत आवश्यकताओं को पूरा किया जा सकता है। उद्योग में संलग्न उचित व्यक्तियों का प्रशिक्षण, ग्राम्य कुटीर एवं लघु उद्योगों के विकास के लिए पर्याप्त आर्थिक सहायक और उनके द्वारा निर्मित वस्तुओं के निर्यात को प्रोत्साहन इत्यादि प्रमुख है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. Jpncem W.D. & V.C. Frinch (1925): "Datailed field Mapping of an agriculture area Annals" Assoc. Amer. Googrs 15.
2. Stamp L.D. (1931) : the Land utilization survey of Britain" Geographical Jaurnal, 78 PP- 40-53.
3. Ramalingan, C. (1963) : "Some Economic Aspects of cropping pattern in India" vol. XVIII No. I - P-160
4. Ojha, R. (19683) : "Jansankhy Bhoogol" pratibha prakashan Kanpur p-131.

*****